

टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

पीस ऑफ माइंड चैनल 24 घंटे

आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे

दिशा चैनल : सायं 5-30 से 6-00

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)

उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी - उड़ीसा, कर्नाटक - सुबह 5.30-6.00 (प्रतिदिन)

मो टीवी - तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक

मो म्यूजिक - तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक

भक्ति - तेलगु सुबह 10.00

विदेश - आस्था इंटरनेशनल में - यूके - 8.40 जीएमटी

यूएसए व कनाडा 8.40 ईब, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्यूजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें - 9414152296

शांतिवन। फैजपुर

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत श्री जनार्दन जी महाराज से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.मोहिनी, ईशू दादी, ब्र.कु.रामनाथ



प्रश्न:- मैं एक कुमार हूँ। मेरी स्थिति न जाने क्यों ऐसी हो गई है कि न तो लौकिक में और न अलौकिक में मन लगता है, कुछ भी करने की इच्छा नहीं होती है, मैं इस स्थिति से बाहर आना चाहता हूँ, कोई उपाय बतायें?

उत्तर - आपको कुछ दिन जल्दी उठना होगा। ये स्पष्ट है कि आप देर से उठते होंगे क्योंकि आपका योग नहीं लगता। उठकर आप बाहर खुली हवा में घूमें, प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लें। स्वयं से बातें करें...ओह...ये जीवन कितना सुंदर है...इसमें मुझे भगवान मिले...मेरे जैसा खुशानसीब कोई नहीं...मैंने अनेक बार भगवान को देखा...वाह मेरे भाग्य...मन में सुंदर विचारों का प्रवाह आने दो। अनेक लोगों के साथ कठिनाई ये है कि वे सुंदर विचार उत्पन्न करना नहीं जानते और इसका कारण है सत्साहित्य (मुरली) का अध्ययन नहीं व व्यर्थ में रूचि ज्यादा। तो सबेरे यदि आपका योग नहीं लगता तो उसे छोड़ दो, स्वमान के संकल्पों का आनंद लो। फिर मुरली को क्लास में जाकर सुनो...इस फीलिंग से सुनो कि भगवान मुझे बातें कर रहा है व मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर बैठकर मुरली सुन रही हूँ। सारे दिन के लिए एक स्वमान ले लो। कर्म करते उसे अनेक बार याद करो। आप इस स्थिति से शीघ्र ही बाहर आ जाएंगे।

प्रश्न:- मैं एक कुमारी हूँ। मेरा मन दिन में एक बार उदास हो ही जाता है, मुझे अकेलापन भासता है...मुझे यह पसन्द नहीं। मैं सदा खुश रहना चाहती हूँ...उपाय बतायें...?

उत्तर - युवाकाल में हार्मोन्स के परिवर्तन के कारण या किसी आंतरिक विकार के प्रभाव के कारण ये स्थिति आती है। कभी-कभी पास्ट जन्मों का कोई विकर्म जब जागृत हो जाता है तो भी ये स्थिति आती है। युवक इस स्थिति के ज्यादा शिकार होते हैं। यदि किसी विशेष समय पर आपकी ये स्थिति आती हो तो उससे पूर्व कुछ अच्छा म्यूजिक या गीत सुनें, फिर कुछ प्रिय चीज पढ़ें, इससे वो उदासी का पर्दा हट जाएगा। जैसे मैंने कहा - अमृतवेले योग व मुरली को विशेष महत्व दो। रात को सोते समय अपने प्रिय स्वमान को पच्चीस बार याद करके सोयें और फिर सबेरे उठने पर भी उसे पच्चीस बार याद करना। इसका प्रभाव स्थिति पर बहुत सुंदर आयेगा। उदासी का कारण किसी देहधारी से प्यार भी है और जब उस सम्बन्ध में अलगाव हो जाता है तो इनाम के रूप में मिलती है - उदासीनता। इसलिए जान लें इस

समय देहधारियों से कामुक प्यार विनाशकारी है। अब ही तो समय आया है जब हम प्रभु-प्रेम का सुख ले सकते हैं। इसलिए मनुष्यों के प्यार के पीछे न भटको, उसमें धोखा ही मिलेगा। अब तो अपने परमपिता से जन्म-जन्म का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त करने की उमंग में रहें। याद रहे कि देहधारियों से प्यार, मन को भटका देगा,



अस्थिर कर देगा, जिसका परिणाम आपको अब जीवन भर और बाद में पूरा कल्प भुगतना पड़ेगा।

प्रश्न:- मैं एक गृहणी हूँ। मैंने लव मैरिज की थी, अब हम दोनों के बीच सदा ही मनमुटाव रहता है। इसका वच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। मैं इस सम्बन्ध में प्रेम भरना चाहती हूँ। मैंने कुछ समय से ज्ञान भी लिया है।

उत्तर - आज के समय में नब्बे प्रतिशत लव मैरिज सफल नहीं होती। क्योंकि जब प्यार होता है तब दोनों ही भावुक होते हैं। ये कामुक प्यार मनुष्य को अंधा बना देता है। तब उन्हें एक दूसरे के स्वभाव संस्कारों का व व्यवहार का ज्ञान नहीं होता। एक वर्ष में ही एक दो की सत्यता समझ में आ जाती है, स्वार्थ व कामनाएँ पूर्ण नहीं होती और टकराव होने लगता है। विदेशों में अशान्ति का यही मूल कारण है। अब आप निश्चय कर लो कि हमें साथ रहना है तो एक को तो झुकना ही पड़ेगा। आप जानती हैं इस टकराव का कारण अहं है। आपने ज्ञान लिया है तो पहले आप झुकें, थोड़ा चुप रहें, बात-बात में डिबेट न करें, अपने को सत्य सिद्ध करने की कोशिश न करें। अपने पति के गुणों को देखें व प्रतिदिन एक समय निश्चित करें उन्हें शुभभावनाएँ दें व मन में उनके लिए प्यार पैदा करें। इसके लिए संकल्प करें कि ये भी एक अच्छी आत्मा है, भगवान की संतान है। बस कुछ ही दिन में टकराव समाप्त हो जाएगा और आप दोनों अपने परिवार सहित सुख भरा जीवन जी सकेंगे।

प्रश्न:- मैं एक माता हूँ, बहुत समय से ज्ञान में हूँ। कुछ वर्ष पूर्व मेरे पति ने शरीर छोड़ दिया था, पांच वर्ष हो गये। मैं उन्हें भूल नहीं पा रही हूँ, मेरा मन अशान्त रहता है, योग भी नहीं लगता। मुझे तीन लड़के हैं...मैं क्या करूँ?

उत्तर:- माताजी...आपने ज्ञान लिया है,

आप जानती हैं मृत्यु पर किसी का अधिकार नहीं। जब कर्मों का हिसाब पूर्ण हो जाता है, तब उस आत्मा को जाना ही होता है। आपको उनसे अति मोह था, यही आपकी अशांति का कारण है। आपकी अशांति से तो आपका पति लौटेगा नहीं, इसके विपरीत आपके वायब्रेशन्स उस आत्मा को जो कि अब बच्चे रूप में है, अशांत करेंगे। यदि सचमुच आपका उस आत्मा से प्यार था तो उसे शांति के वायब्रेशन्स दो। कई माताओं की ऐसी ही मनोस्थिति है। इस कारण वे जन्म-जन्म के भाग्य से स्वयं को वंचित कर रही हैं। इससे बाहर निकल कर अपने बच्चों को प्यार दो और उनकी पालना करो। इस मनोस्थिति के कारण कइयों के घर में उदासी का माहौल रहता है। ज्ञानी आत्मा के ये लक्षण नहीं हैं। हमने कई माताएँ ऐसी भी देखी जिन्होंने पति के जाने के बाद अपनी स्थिति को बिगड़ने नहीं दिया और अपने समाज को दिखा दिया कि वे श्रेष्ठ ज्ञानी हैं।

अब आप इस तरह चिन्तन करें...एक पति चला गया तो मुझे भगवान भी तो मिल गया। अब भगवान ही मेरा प्रियतम है, मुझे अब उसके प्यार में ही मग्न रहना है। वह मुझे बहुत प्यार करता है, वह मेरा रोज श्रृंगार करता है, वह मेरे लिए स्वर्ग का राज्य भाग्य लाया है। यह कल्प-कल्प की बाजी मुझे गंवानी नहीं है। अव्यक्त मुरली पढ़ते रहो, घर में अच्छे-अच्छे गीत सुनो। अपने बच्चों को प्यार दो।

प्रश्न:- मैंने सुना है कि अब वावा नहीं आयेगे। क्या हम और भी प्रभु-मिलन का सुख पायेंगे?

उत्तर - जरूर बाबा आयेंगे। परन्तु अच्छी स्थिति से आप रोज अमृतवेले परमात्म मिलन का सुख प्राप्त कर सकते हैं।

अध्यात्म से दूर होगी... पृष्ठ 1 का शेष

शक्ति को बढ़ाना है तो अन्न की शुद्धि पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि अभी परमात्मा के अवतरण का संदेश सभी लोगों को दो जो कलियुग को ही स्वर्ग समझकर बैठे हैं, उन्हें इस भ्रम से निकालना है। और परमात्मा की सत्य पहचान देनी है।

इस अवसर पर संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी से भी उन्होंने गहन आध्यात्मिक चर्चा की। उन्होंने शांतिवन में चल रहे देश-विदेश के विभिन्न सेवाकेंद्रों की वार्षिक मीटिंग में भी भाग लिया जहां उन्हें ब्रह्माकुमारीज के विभिन्न प्रभागों द्वारा चल रही आध्यात्मिक सेवाओं से उन्हें अवगत कराया गया।



पाठकों की विशेष मांग पर 'ओम शांति मीडिया' में निरंतर प्रकाशित हो रही शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह "कथा सरिता" तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह "हैपिनेस इंडेक्स" अब संकलन के रूप में उपलब्ध है। इसे आप ओम शांति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

सूचना

ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय से प्रकाशित पाक्षिक 'ओम शांति मीडिया' न्यूज पेपर कम पत्रिका अपने रचनात्मक एवं सृजनशील प्रकाशन से आज संस्था का मुख पृष्ठ बन गया है। आप सभी भाई-बहनों के असीम प्यार ने हमारा उमंग-उत्साह बढ़ाया है। जिससे ईश्वरीय सेवाओं के समाचार आपलोगों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं। आप सभी भाई-बहनों से नम्र अनुरोध है कि इस 'प्लेटिनम जुबली' वर्ष में कम से कम पांच नये सदस्य बनाकर परमात्मा की प्रत्यक्षता में आप अपना योगदान अवश्य दें तथा आप हमें अपनी प्रतिक्रिया से भी अवश्य अवगत कराये। सेवा समाचार तथा फोटो एवं कार्यक्रम की जानकारी नीचे दिये गए ईमेल पर भेजे जिससे कि उसी पत्रिका/शिका विन्यास जा सके। ईमेल - mediabkm@gmail.com